पुनरावृत्ति कार्य-पत्र

पुनरावृत्ति कार्य-पत्र–1

पृष्ठ संख्या–239

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

I. 1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)

II. 1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (घ)

पुनरावृत्ति कार्य-पत्र–2

पृष्ठ संख्या–241

उत्तर–

I. (1) मंदिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों या चर्च में बढ़ती भीड़ और प्रचार माध्यमों द्वारा मेलों और पर्वों के व्यापक कवरेज वस्तुतः आस्था के प्रतीक नहीं हैं बल्कि आस्था के संदर्भ में भ्रम पैदा करनेवाले हैं।

(2) लेखक की दृष्टि में गांधी को लोगों ने बाह्य आवरण से समझा है जिसके परिणामस्वरूप दो अक्टूबर और तीस जनवरी को लोग कुछ आडंबर करते चले आ रहे हैं।

(3) जिन जीवन-मूल्यों को अपने जीवन में उतारना चाहिए था, उनके लिए मात्र आस्थावान होने की सौगंध खाना सच्ची आस्था नहीं है। गांधी जी के सिद्धांतों का लेशमात्र प्रभाव भी लोगों के जीवन पर दिखाई नहीं देता, फिर उनके नाम की दुहाई देना आडंबर ही तो है।

(4) लेखक की दृष्टि में 'लगे रहो मुन्ना भाई' की गांधीगिरी एक सिनेमाई कथानक के सिवाय कुछ भी नहीं है। फिल्म उतरी और उसका प्रभाव खत्म।

(5) मुन्नाभाई की गांधीगिरी की तुलना लेखक ने आस्थाहीनता से की है।

(6) **शीर्षक :** गांधीगिरी।

II. (1) दूसरों के अवगुणों पर ध्यान देने एवं ईर्ष्या की दुष्प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप मनुष्य इस तथ्य को भुला देता है कि ईर्ष्या का दाहक स्वरूप स्वयं उसके समय, स्वास्थ्य और सद्वृत्तियों के लिए कितना विनाशकारी सिद्ध हो रहा है।

(2) सामान्य जन सारा जीवन आत्मनिरीक्षण को भुलाकर परछिद्रान्वेषण में ही लगा रहा है। इसका मूल कारण है– उसकी ईर्ष्या की दाहक दुष्प्रवृत्ति। दूसरे की उन्नति को वह अपनी ईर्ष्या के कारण पचा नहीं पाता और उसके गुणों पर ध्यान न देकर केवल उसके अवगुणों को ही प्रचारित करने लगता है।

(3) हमारे शास्त्रों में परनिंदा को पाप बताया गया है। इससे मुक्ति का उपाय है कि व्यक्ति को दूसरों के दोषों को न देखकर अपने दुर्गुणों एवं अपनी कमजोरियों की ओर देखना चाहिए तथा उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

(4) मनुष्य की दृष्टि सदा दूसरों की बुराइयों पर पड़ती है। इसके मूल में उसकी ईर्ष्या की दाहक दुष्प्रवृत्तियाँ कार्यशील रहती हैं। ईर्ष्यावश मनुष्य दूसरों की उन्नति को पचा नहीं पाता तथा वह दूसरों के दोषों तथा दुर्गुणों को ही प्रचारित करने लगता है।

(5) **उपसर्ग :** दु:, **मूल शब्द :** प्रवृत्ति

(6) **शीर्षक :** परनिंदा।